अभिनव क़दम

18-19

2

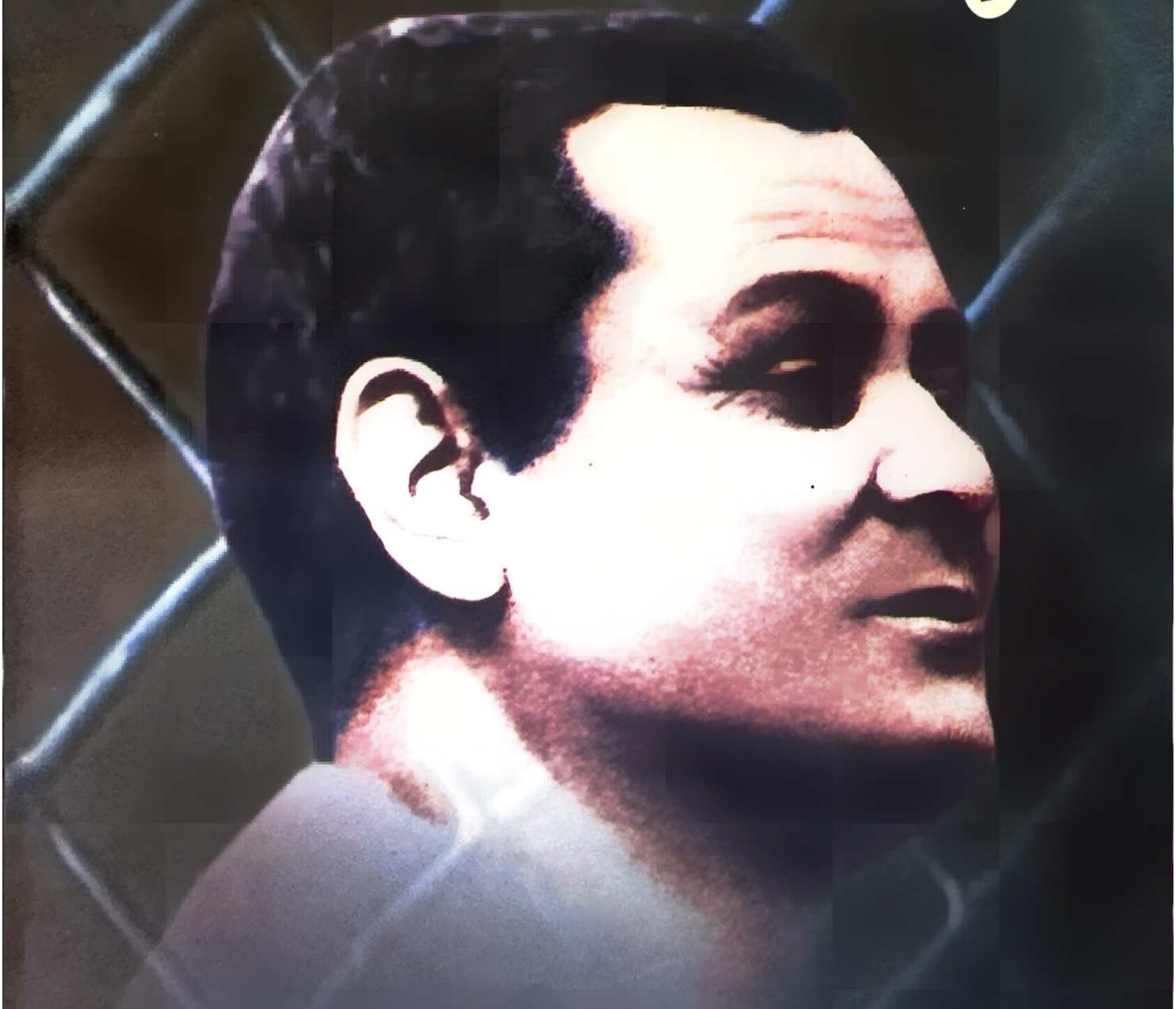

राहुल सांकृत्यायन : मूल्य और मूल्यांकन

संस्थापक/संरक्षक : अब्दुल बिस्मिल्लाह, उत्तमचन्द

वर्ष : 12 अंक : 18-19 (संयुक्तांक) दिस. 2007 - नव. 2008

अभिनव क़दम

जन संस्कृति के पक्ष में आयोजन

प्रधान संपादक : चन्द्रदेव राय

संपादक : जयप्रकाश धूमकेतु

संपादन सहयोग : शिवकुमार पराग
संजय श्रीवास्तव

प्रसार व्यवस्था : श्रीमती राजेश्वरी

संपर्क :

'प्रकाश निकुंज'
223, पावर हाउस रोड, निजामुद्दीनपुरा
मऊनाथ भंजन, मऊ (उ.प्र.)–275101

फोन : 0547–2223113, मोबाइल : 09415246755, 09415241755
ई-मेल : patrika.abhinavkadam@gmail.com

सहयोग राशि

यह अंक : 100.00
संस्थाओं के लिए : 200.00
आजीवन सदस्यता : 2000.00

प्रकाशक : साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्था, 'मंथन' मऊनाथ भंजन, मऊ (उ.प्र.)
मुद्रक : एकेडेमी प्रेस, दारागंज, इलाहाबाद (उ.प्र.)

संपादन/संचालन/अवैतनिक, अव्यवसायिक। अभिनव कदम से सम्बन्धित सभी विवाद मऊ न्यायालय के अधीन होंगे। अभिनव कदम में प्रकाशित रचनाओं की रीति-नीति था विचारों से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है।

यह अंक
त्रिलोचन शास्त्री
की
पावन स्मृति में

नील गगन को चूम-चूम कर
बिखर चुकी हैं
महासिंधु की तुमुल तरंगें
सागर की विश्रान्त लहरियाँ
लौट रही हैं तट को
धीरे-धीरे लहरें-लहरें-फिर लहरें
संध्या के गोधूलि आवरण-तले।
और उधर-
कल उगने वाला सूर्य
सहस्त्रांशु वह।
लक्ष-लक्ष चरणों से धावित
पूजा कमल लिए अंजलि में
श्री राहुल के पद-वन्दन को।

—विश्वनाथ त्रिपाठी

अनुक्रम

सम्पादकीय

समाजवादी जनतन्त्र और राहुल / श्री निवास शर्मा / 5
महापण्डित राहुल 'साइंस' अध्येता एवं विचारक / डॉ. वीरेन्द्र सिंह / 12
राहुल सांकृत्यायन का भाषिक चिन्तन / रामनिहाल गुंजन / 21
राहुल आज के सन्दर्भ में / डॉ. नामवर सिंह / 30
इतिहास की तह में मनुष्य की सृजनशीलता की तलाश / डॉ. उर्मिलेश / 43
राहुल सांकृत्यायन का रामविलास शर्मा से मतभेद / भगवान सिंह / 51
राहुल सांकृत्यायन और ऐतिहासिक भौतिकवाद / प्रदीप सक्सेना / 68
1857 और राहुल सांकृत्यायन / वीरेन्द्र यादव / 88
राहुल सांकृत्यायन का होना लेखन जगत का कोना-कोना/भवदेव पाण्डेय / 101
बौद्ध दर्शन और राहुल सांकृत्यायन / श्रीप्रकाश शुक्ल / 105
राहुल सांकृत्यायन और डॉ. अम्बेडकर : सन्दर्भ बौद्ध धर्म / कंवल भारती / 111
राहुल, मार्क्सवाद और बाजार युद्ध / विष्णुचन्द्र शर्मा / 129
राहुल और हमारा समय / परमानन्द श्रीवास्तव / 136
कुछ चर्चा राहुल विवेक की / डॉ. पी. एन. सिंह / 140
राहुल के सपने और समय की दिशा / रघुवंशमणि / 157
आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी की निगाह में राहुल सांकृत्यायन / विजय बहादुर सिंह / 170
मध्य एशिया का इतिहास का इतिहास / डॉ. कमला सांकृत्यायन / 174
राहुल के ऐतिहासिक उपन्यास / सियाराम शरण प्रसाद / 188
राहुल सांकृत्यायन की इतिहासदृष्टि और समकालीन चुनौतियां / श्रीनारायण समीर/ 192
राहुल जी की दर्शन यात्रा और दर्शन दृष्टि / सच्चिदानन्द प्रसाद / 198
राहुल सांकृत्यायन की दक्खिनी हिन्दी काव्यधारा / अब्दुल बिस्मिल्लाह / 204
राहुल का दार्शनिक विजन / रोहिताश्व / 212
राहुल और किसान आन्दोलन / अवधेश प्रधान / 220
राहुल सांकृत्यायन का किसान आन्दोलन / जितेन्द्र वर्मा / 235
राहुल सांकृत्यायन और भाषा समस्या / पंकज गौतम / 239
हजारीबाग जेल में राहुल सांकृत्यायन की सृजन यात्रा / प्रभुनारायण विद्यार्थी / 248
राहुल और इस्लाम धर्म / डॉ. मुहम्मद कमाल / 253
जययौधेय और राहुल की इतिहास दृष्टि / राजेन्द्र कुमार / 261
राहुल सांकृत्यायन का साहित्यालोचन / नन्दकिशोर नवल / 267
राहुल के ऐतिहासिक उपन्यास : आधार और अधिरचना का रचनात्मक तर्कशास्त्र / विजेन्द्र नारायण सिंह / 275
वोल्गा से गंगा तक पदचिन्हों की पांत/जेता सांकृत्यायन अनुवाद-रामकीर्ति शुक्ल/ 284
धर्म के बारे में राहुल के साथ / राजेन्द्र कुमार / 296
तुम्हारी क्षय की प्रांगिकता / अनिल सिन्हा / 305
दिमागी गुलामी दुनिया को बदलने में बड़ी बाधा / डॉ. जनार्दन / 311

महापण्डित राहुल सांकृत्यायन और अपभ्रन्श साहित्य / विश्वनाथ त्रिपाठी / 319
हिन्दी साहित्य के उपेक्षित पक्ष की खोज / डॉ. श्रुति / 326
राहुल का सभ्यता विमर्श / रामप्रकाश कुशवाह / 338
राहुल सांकृत्यायन का भारत विष्णुचन्द्र शर्मा की दृष्टि में / कृष्णचन्द गुप्त / 352
राहुल सांकृत्यायन घुमक्कड़ स्वामी / डॉ. विजय शर्मा / 356
सांस्कृतिक अस्मिता के ध्वजवाहक : राहुल सांकृत्यायन / डॉ.लक्ष्मण प्रसाद / 365
राहुल बन्धन और उन्मुकता का अपूर्व संगम / रामकमल राय / 372
राहुल जी की सांस्कृतिक दृष्टि / श्रीराम वर्मा / 376
राहुल सांकृत्यायन के ऐतिहासिक उपन्यास : प्रगतिशील सन्दर्भ / कुँवरपाल सिंह / 380
संवाद की भाषा और उसका स्वर / सूरज पालीवाल / 385
महापण्डित राहुल का वैचारिक आधार / कमला प्रसाद / 392
हिन्दी भाषा साहित्य को राहुल की देन / रामचन्द्र तिवारी / 399
राहुल की धर्म दृष्टि / ब्रजकुमार पाण्डेय / 407
सिंह सेनापति : इतिहास बनाम ऐतिहासिक यथार्थ / अभिषेक दूबे / 413
राहुल की इतिहास दृष्टि / विश्वम्भर नाथ उपाध्याय / 417
राहुल के यात्रा साहित्य का वैशिष्ट्य : सन्दर्भ किन्नर देश में / कमलेश सिंह / 424
राहुल का कथा कर्म और इतिहास बोध / मधुरेश / 429
राहुल का स्त्रीवादी मूल्यांकन / जगदीश्वर चतुर्वेदी / 445
राहुल के कथा साहित्य में स्त्री, यौन और अछूत / दिनेश कुशवाह / 455
पन्ने से उठती हुई लाल लपटें / भरत प्रसाद / 459
सिद्ध-सामन्त युग और राहुल की इतिहास दृष्टि / माधवेन्द्र पाण्डेय / 477
राहुल सांकृत्यायन के निबन्धों का वैशिष्ट्य / डॉ. सरोज सिंह / 488
वोल्गा से गंगा के बहाने साहित्य और इतिहास का अर्न्तसंबंध / रविभूषण पाठक / 493
राहुल सांकृत्यायन का सामाजिक चिन्तन / राकेश यादव / 498
बाईसवीं सदी : यूटोपिया की सार्थकता / मूलचन्द गौतम / 502
इतिहास की व्यथा-कथा का शिल्प / डॉ. कन्हैया सिंह / 508
एक गांव का सामाजिक-सांस्कृतिक दस्तावेज:कनैला की कथा/ दीनबन्धु तिवारी / 513
राहुल सांकृत्यायन के कथा साहित्य में वर्णित संस्कृतियाँ / चन्द्रशेखर त्रिपाठी / 522
सभ्यता और संस्कृतियों के उद्भव और विकास की अनुपम कथा यात्रा :
'वोल्गा से गंगा' / डॉ. महावीर अधिकारी / 531
हिन्दी की दूसरी परम्परा का सही शलाका पुरुष : राहुल / डॉ. सी. एल. प्रभात / 536
राहुल के भोजपुरी नाटक : प्रासंगिकता, उपादेयता और मार्क्सवादी विचारों की झलक /
लालसा लाल तरंग / 543
राहुल का स्वप्नदर्शी उपन्यास : मधुर स्वप्न / जगदीश गुप्त / 558
राहुल की दृष्टि में इस्लाम धर्म / डॉ. ओम राज / 562
राहुल : सतह से उठते जनता के आदमी की कहानी / अरविन्द त्रिपाठी / 567
रचनाकारों के सम्पर्क सूत्र / 575

संपादकीय

एक पाँव रखता हूँ सौ राहें फूटती हैं

अभिनव क़दम- राहुल विशेषांक का यह दूसरा खण्ड राहुल सृजित कृतियों के मूल्यांकन-खण्ड के रूप में आपके सामने है। राहुल जी को याद करते हुये मुक्तिबोध के हवाले से कहूँ तो- 'एक पाँव रखता हूँ सौ राहें फूटती हैं/और सबसे गुजर जाना चाहता हूँ। राहुल के सृजन बोध पर यह एक सटीक टिप्पणी होगी। सन्दर्भित कविता के परिप्रेक्ष्य में देखा जाय तो राहुल का सृजन संसार उन सौ राहों पर गुजरते हुए एक-एक क्षण का हिसाब रखते हुए रचा गया संसार है। रचनात्मकता की विराटता की यह दुनिया सिर्फ राहुल की दुनिया ही हो सकती है। जमीनी सच्चाई और कलम की रौशनाई का स्वर राहुल को महापण्डित बनाता है। सामाजिक बदलाव की अदम्य जिजिवीषा के साथ राहुल के भीतर का सर्जक एक सामाजिक-राजनीतिक-साहित्यिक एक्टिविस्ट की तरह दुनिया को सिर्फ एक रंगशाला की तरह ही नहीं बल्कि एक प्रयोगशाला की तरह इस्तेमाल करता है। राहुल सदैव सुर्ख सवेरा की उम्मीद के सृजनधर्मी रचनाकार हैं। कागज के पन्नों पर रौशनाई की अर्थवत्ता अपनी वैचारिकी के साथ स्थापित करने वाले सर्जकों में राहुल अपने तरह के अकेले सर्जक हैं। प्रभाकर माचवे की दृष्टि में- 'राहुल प्रतिक्रियावाद के गढ़ों पर प्रहार करने के लिए-धार्मिक सम्प्रदायवाद, अन्धविश्वास, रूढ़िवाद, पाखण्डवाद, सामन्तवाद, पूँजीवाद और साम्राज्यवाद को निशाने पर रखते हैं। सृजनशील राहुल की कृतियों में नव सृजन और सामाजिक पुर्ननिर्माण के लिए- 'हमें ढहाने होंगे तमाम गढ़ और किले' की ध्वनियां हर कहीं सुनाई पड़ती हैं। साहित्य की विविध विधाओं में राहुल अपनी सर्जनात्मकता के साथ उपस्थित हैं। आनुभाविक ज्ञान की बुनियाद पर वैज्ञानिक दृष्टि की केन्द्रीयता राहुल के लेखन की विशिष्टता है। राहुल की रचनाशीलता और व्यावहारिकता उनके व्यक्तित्व में साथ-साथ उभड़ती है। लिखने और दिखने की यह एका अन्यत्र दुर्लभ है। राहुल बार-बार अपने लेखन में प्राथमिकता के आधार पर आर्थिक सवालों को उठाते हैं साथ ही उन सवालों पर जनता की लड़ाई में साथ खड़े होते हैं, नेतृत्व करते हैं, लाठियाँ खाते हैं, खून बहाते हैं और हथकड़ियाँ पहने जेल भी जाते हैं। राहुल जिस किसी कारावास में जाते हैं उसे सृजनपीठ के रूप में इस्तेमाल करते हैं, जहाँ चिन्तन, मनन, अध्ययन, लेखन का कार्य तीव्र प्रवाह के साथ चलता रहता है। जिन्दगी की लय और लौ को सहेजते हुए प्राय: राहुल के सभी महत्वपूर्ण ग्रन्थ जेलों में लिखे गये।

भारतीय समाज की संरचना और उसके भीतर के अर्न्तविरोध को राहुल जानते और पहचानते थे। राहुल का आहत उद्विग्न मन बुद्ध के प्रेम और करूणा की दृष्टि को जीवन का आधार बनाता है। राहुल बुद्ध के आप्तवचन-दुख है, दुख का कारण है, दुख का निवारण है और निवारण के उपाय हैं, तक ही अपने को सीमित नहीं रखते बल्कि मूल कारणों की तलाश में जनता के बीच जाते हैं, इतिहास की परतों को खोलते हैं। राहुल की मूल चिन्ता दुनिया को बदलने की थी और दुनिया को बदलने के औजारों की तलाश-साहित्य, संस्कृति, इतिहास, दर्शन, पुरातत्व, भाषा, लिपि, लोक भाषा, राजनीति के मोर्चे पर करते हैं राहुल। सामाजिक बदलाव की रणभूमि में भाषा के इस्तेमाल और वैचारिक दृष्टि के प्रक्षेपण की जितनी मजबूत पकड़ राहुल सांकृत्यायन की थी उतनी किसी और भारतीय विचारक व साहित्यकार सर्जक